M.A. (Sanskrit) Examination, December-2025

Roll No.	**:**	
Unique Paper Code	**:**	**213137281121**
Title of the Paper	**:**	**Ṛgvedaprātiśākhya & Paṇiniyaśikṣā**
Name of the Course	**:**	**M.A. Sanskrit**
Type:	**:**	**DSE**
Scheme	**:**	**NEP-PGCF**
Semester	**:**	**I**
Duration	**:**	**3 Hours**
Maximum Marks	**:**	**90**

इस प्रश्नप्रत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमाँक लिखिए।

Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper

टिप्पणी: अन्यथा आवश्यक न होने पर इस प्रश्न-पत्र का उत्तर **संस्कृत** या **हिन्दी** या **अंग्रेजी** किसी एक भाषा में दीजिए, परन्तु सभी प्रश्नों का माध्यम एक ही होना चाहिए।

Note: Unless otherwise required in a question, answers should be written in **Sanskrit** or in **Hindi** or in **English** but the same medium should be used throughout the paper.

1. अधोलिखित प्रत्येक खण्ड में से किन्हीं **दो-दो** सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या कीजिए। 6x6 = 36

   Explain any two sutras from each section of the following with an example:

   i. क. ऊष्मा रेफी पञ्चमो नामिपूर्वः।
      ख. ओजा ह्रस्वाः सप्तमान्ता स्वराणाम्।
      ग. अधः स्वदासी३दुपरि स्विदासी३दर्थे प्लुतिर्भीरिव विन्दतीँ३त्रिः।
      घ. तालव्यावेकारचकारवर्गाविकारैकारौ यकारः शकारः।

   ii. क. पदान्तान्पदादिभिः संदधदेति यत्सा कालाव्यवायेन।
      ख. समानाक्षरमन्तस्थां स्वामकण्ठ्यं स्वरोदयम्।
      ग. एकाक्षर समावेशे पूर्वयोः स्वरितः स्वरः।
      घ. जात्यवद्वा तथा वान्तौ तनू शचीति पूर्वयोः।

   iii. क. विसर्जनीय आकारमरेफी घोषवत्परः।
      ख. ङकारेऽघोषोष्मपरेऽन्तरैके ककारम्।
      ग. घोषवत्पराः प्रथमास्तृतीयान्स्वान्।
      घ. करं कृतं कृधि करत्करित्यपि परेषु।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **पांच** की सोदाहरण व्याख्या कीजिए। 6x5 = 30

Define any **five** of the following.

समानाक्षर, प्रगृह्य, वर्णराशिक्रम, प्रश्लिष्टसन्धि, प्रकृतिभाव, जात्यस्वरित, वंशगमसन्धि, निपातन, प्रश्रितसन्धि

3. निम्नलिखित श्लोकों की व्याख्या कीजिए। 8x2 = 16

Explain the following verses:

क. अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तथा।
जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च॥

अथवा/OR

हकारं पञ्चमैर्युक्तमन्तस्थाभिश्च संयुतम्।
उरस्यं तं विजानीयात् कण्ठ्यमाहुरसंयुतम्॥

ख. प्रसिद्धमपि शब्दार्थमविज्ञातमबुद्धिभिः।
पुनर्व्यक्तीकरिष्यामि वाच उच्चारणे विधिम्॥

अथवा/OR

मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्॥

4. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर **संस्कृत** में टिप्पणी लिखिए। 8x1 = 8

Write note on any **one** of the following in **Sanskrit**:

त्रिषष्टिः चतुष्षटिर्वा वर्णाः **अथवा/OR** वर्णोच्चारणाप्रक्रिया